International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

वर्तमान समय में बाल साहित्य की प्रासंगिकता

जशवन्त सिंह
शोधार्थी
हिन्दी विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली
jssingh044@gmail.com

प्रोफेसर मीना यादव
शोध पर्यवेक्षक
हिन्दी विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली
meenaya1@gmail.com

शोध सार –

आज के बच्चे कल के नागरिक, राष्ट्र निर्माता हैं उनके लिए लिखा गया बाल साहित्य बेहद महत्वपूर्ण है। अलिखित या मौखिक रूप में शुरू हुये बाल साहित्य निरंतर परिवर्द्धित एवं संबर्द्धित लिखित रूप में सुविकसित एवं समृद्धशाली स्वरूप में हम सबके सम्मुख है।

बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में बालोपयोगी महत्वपूर्ण गुण एवं मानवीय मूल्यों को स्थापित किया जा सकता है।

प्राचीन काल से ही बाल साहित्य की प्रासंगिकता सदैव विद्यमान रही है। आज आधुनिकता के दौर में बाल साहित्य के प्रति बच्चों का आकर्षण कुछ कम हुआ है, जिसे श्रेष्ठ बाल साहित्य के द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

बच्चों से पहले बड़ों–माता–पिता शिक्षकों आदि को बाल साहित्य अवश्य पढ़ना चाहिए। जिससे बच्चों को अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध कराने में सुविधा रहेगी।

बाल साहित्य को प्रमुख तीन रूपों में बांटा जा सकता है –

1. शिशु साहित्य 2. बाल साहित्य 3. किशोर साहित्य

वर्तमान समय में भी बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक बाल साहित्य बेहद प्रासंगिक है।

बीज शब्द – बालक, राष्ट्र–निर्माता, महत्वपूर्ण, विकास, बाल मनोविज्ञान, प्रासंगिकता, परम्परा, विकसित, तादाम्य, बाल–साहित्य आदि।

मूल आलेख

जिस प्रकार साहित्य समाज से प्रभावित होता है उसी प्रकार तत्कालीन लिखे जाने वाले साहित्य से समाज भी प्रभावित होता है।

समाज में कुछ ऐसी भ्रांति पाई जाती है कि बड़ों के लिए लिखे गये साहित्य की अपेक्षा बच्चों के लिये लिखा गया साहित्य बचकाना होता है या कम महत्वपूर्ण होता है किन्तु ये वास्तविकता नहीं है। आज के बच्चे बड़े होकर आने वाले समय में राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। ऐसे आगामी राष्ट्र निर्माताओं के लिए लिखा गया बाल साहित्य कम महत्वपूर्ण कब हो सकता है। बाल साहित्य की महत्ता के सन्दर्भ में डॉ0 विजय लक्ष्मी सिन्हा कहती हैं ''बालक, देश का भावी कर्णधार है। आज के बालक कल का राष्ट्र निर्माता है। अपनी योग्यता के बल पर जब वह बुराइयों को दूर कर अपने समाज तथा देश में नई चेतना भरता है तब वही राष्ट्र विकसित होकर उन्नतशील देशों के समक्ष खड़ा होने योग्य हो जाता है। किन्तु आरम्भ में बालक का मस्तिष्क कोरी स्लेट की तरह होता है जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। अतः उसके अनिश्चित एवं अनिधार्रित भविष्य की रूपरेखा देना हमारा काम है और यह कार्य साहित्य के माध्यम से किया जाता है। इसलिए बाल साहित्य की महत्ता अन्य साहित्य से अधिक बढ़ जाती है।''[i]

अतः कहा जा सकता है कि बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य अन्य साहित्य से महत्वपूर्ण होता है।

जिस प्रकार राष्ट्र के निर्माण में बच्चों का महत्वपूर्ण योगदान अपेक्षित होता है ठीक इसी प्रकार बच्चों के सुन्दर व्यक्तित्व निर्माण में बाल साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

बाल साहित्य एक महत्वपूर्ण साहित्य है जो बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करता है।

बाल साहित्य बाल मनोविज्ञान पर आधारित होता है। अर्थात बच्चों के बाल स्वभाव, जिज्ञासाओं अभिरूचियों आदि का प्रभाव बाल साहित्य में दिखाई देता है। बाल मनोविज्ञान को बाल विकास भी कहा जाता है इसी पर प्रकाश डालते हुये डॉ0 ओ0पी सिंह कहते हैं कि ''बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव विकास का अध्ययन किया जाता है। यह मनोविज्ञान की एक शाखा है। मनोवैज्ञानिकों की रूचि बालकों के व्यवहारों को समझने में बढ़ी है। उसका स्वभाविक कारण है क्योंकि बाल व्यवहारों के पीछे कुछ जटिल गुत्थियाँ बिना उन्हें समझे उनके व्यवहारों का विश्लेषण एवं व्याख्या करना कठिन है बाल व्यवहार बालकों के विकास से सम्बन्धित है। इसलिए वर्तमान में बाल मनोविज्ञान के स्थान पर मनोवैज्ञानिक इसे वाल विकास कहना ज्यादा उचित समझते हैं।''[ii] आगे डॉ0 ओ0पी0 सिंह, गर्भकाल से लेकर प्रौढ़ावस्था तक मानव विकास के बारे में बताते हुये कहते हैं – ''मानव विकास गर्भकाल से प्रारंभ होकर मृत्यु पर्यन्त चलता रहता है। विकास अभिवृद्धि नहीं है। जो एक निश्चित समय तक हो बल्कि विकास में वे सभी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि विशेषताएँ सम्मिलित होती हैं जो उसे परिपक्वता की ओर ले जाती

है। मानव जीवन की अवस्थाओं से होकर गुजरता है जैसे शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा प्रौढ़ावस्था।''[iii]

अर्थात कहा जा सकता है कि आज जो प्रौढ़ है, कल वह शैशवास्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में गुजरकर ही आए हैं और आज इनकी प्रोढ़ावस्था की परिपक्वता पिछली अवस्थाओं में अध्ययन किये गए बाल साहित्य का प्रतिफल कही जा सकती है।

बाल साहित्य ऐसा हो जो मनोरंजक होने के साथ ही सरल, सहज, शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक हो। बाल साहित्य के सन्दर्भ में कुछ विद्वानों के मत प्रासंगिक हैं।

निरंकार देव सेवक के अनुसार ''बच्चों का मन बहुत चंचल होता है वे किसी विषय पर थोड़ी देर के लिये भी अपने चित्त को एकाग्र नहीं कर सकते। उनमें कोतूहल एवं जिज्ञासा की प्रवृत्ति इतनी प्रवल होती है। कि वे सदैव नई–नई वस्तुओं को देखने समझने और उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने में लालायित रहते हैं। चटकीली चमकदार, रंग–बिरंगी वस्तुओं और लय की ओर वह विशेष रूप में आकर्षित होते हैं, गद्य की अपेक्षा गीत उन्हें अधिक आकर्षित करता है वे अपने मकान या कक्षा के सामने वाली सड़क पर तेजी से जाती हुई मोटर या बस को उत्सुकता पूर्वक देखे बिना नहीं रह सकते। शिक्षा और उपयुक्त साहित्य की ओर उनकी रूचि को मोड़ कर उन्हें एकाग्रचित्त होना सिखाया जा सकता है पर ये शिक्षा और साहित्य इस प्रकार के होने चाहिए कि उन्हें अपनी रूचि को मोड़ने में किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव न हो क्योंकि ऐसा होने से उनके स्वभाविक मानसिक विकास की गति अवरूद्ध हो जाती है।[iv]

बाल साहित्य के सम्बन्ध में डॉ0 शकुन्तला कालरा कहती हैं ''बाल साहित्य की अनिवार्य शर्त है कि वह बालक की वय, रूचि, समझ योग्यता को ध्यान में रखकर रचा जाए। इसे रचते समय लेखक अनुभूत से अभिव्यक्ति तक बालक बना रहे। विद्वान, उपदेशक या शिक्षाशास्त्री नहीं क्योंकि बच्चे साहित्य मनोरंजन के लिए पढ़ते हैं। यहाँ पर ये कहना भी वाजिब है कि संस्कार और शिक्षा का रास्ता भी खेल–खेल में मनोरंजन के दरवाजे से हो कर ही निकल सकता है।''[v]

डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' के अनुसार ''ऐसा साहित्य, जिसे पढ़कर बच्चे आनंदित हों इनका सम्यक विकास हो और आत्म सुधार तथा जीवन संघर्षो से जूझने की दिशा में क्रियाशील हो सकें, सही मायने में वही बालसाहित्य है''[vi]

अतः कहा जा सकता बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य–बाल स्वभाव, बाल अभिरूचियों के साथ ही मनोरंजक एवं प्रेरणादाई होना चाहिए।

बाल साहित्य को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. **शिशु साहित्य** –शिशु साहित्य 6 वर्ष की अवस्था तक के बच्चों के लिए लिखा जाता है। शिशु साहित्य मनोरंजक एवं भावात्मक होता है। शिशु साहित्य के अन्तर्गत लोरी, प्रभाती छोटी–छोटी बाल कहानियां, चुटकुले, छोटी–छोटी बाल कविताएँ, शिशु गीत आदि आते हैं जो बच्चों को बेहद प्रिय लगते हैं। शिशु साहित्य के सन्दर्भ में प्रकाश डालते हुये डॉ0 नागेश पांडेय संजय बताते हैं ''6वर्ष तक के बालकों के लिए रचित साहित्य शिशु साहित्य कहलाता है। शिशुओं का अनुभव एवं शब्दकोश अत्यंत सीमित तथा कल्पना क्षेत्र अत्यंत विचित्र होता है। अस्तु उनके लिए अति सरस सहज भाषा एवं सुग्राह्य विषय वस्तु की आवश्यकता है।''[अपप] शिशुओं के लिए शिशु साहित्य बेहद प्रासंगिक होता है साथ ही इनके विकास में भी सहायक होता है

2. **बाल साहित्य** – बाल साहित्य 6 वर्ष से अधिक अवस्था के बच्चों के लिए लिखा जाता है। इस साहित्य में शिशु साहित्य की अपेक्षा बाल साहित्य में मनोरंजन के साथ कुछ बौद्धिकता का चित्रण दिखाई देता है। बाल साहित्य एक महत्वपूर्ण साहित्य है बाल साािहत्य के अन्तर्गत बाल कविता, वाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल नाटक, चुटकुले, बाल पहेलियां, बाल निबंध, बाल जीवनी आदि रचनाएं आती हैं। बाल साहित्य के सम्बन्ध में डॉ0 'नागेश' पांडेय संजय कहते हैं '' 7 से 12 वर्ष तक की अवस्था के बालकों के लिए रचित साहित्य बाल साहित्य की कोटि में आता है। इस वर्ग के बच्चे शनैः शनैः परिवार–पड़ोस की सीमा से बढ़कर समाज, राष्ट्र तथा विश्व के घटनाचक्र से संबद्ध होते हैं। अनुभव क्षेत्र तो विस्तृत होता है, कर्तव्य और दायित्व का बोध भी विस्तार पाता है। उनके संस्कार बलिष्ठ होते जोते हैं। कल्पना से हटकर भी कोई जगत है, यथार्थ जगत से इसे अनुभूत करते हैं।[viii]

अतः कहा जा सकता कि बाल साहित्य बच्चों के विकास के लिए नवीन दिशा प्रदान करता है धीर–धीरे बच्चों की समझ विकसित होने लगती है। बाल साहित्य बच्चों को कल्पना जगत से हटकर यथार्थ जगत की ओर प्रस्थान करने में भी मदद करता है।

3. **किशोर साहित्य** – 12 वर्ष से अधिक अवस्था के बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य किशोर साहित्य कहलाता है। वाल्यावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में बच्चों में तीव्रता से समझ विकसित होने लगती है। किशोर साहित्य के सन्दर्भ में डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' कहते हैं कि ''13–14 से 17–18 वर्ष तक के बालकों के लिए लिखित साहित्य, किशोर साहित्य है। किशोरावस्था, एक तरह के संक्रमण काल की अवस्था होती है इस अवस्था में मानसिक एवं शारीरिक परिवर्तन तेजी से होता है। तर्क एवं विश्लेषण क्षमता तो बढ़ती ही है, किसी बात का प्रभाव भी त्वरित–वेग से पड़ता है। मनोवैज्ञानिक प्रभाववश उच्छृंखलता भी इस अवस्था में प्रायः देखने को मिलती है। किशोर अनियंत्रण चाहता है आत्मभिमान उसमें जागता है। भावी जीवन को लेकर स्वभाविक

तनाव भी संभव है। इन स्थितियों की सही अनुभूति एवं अभिव्यक्ति ही किशोर साहित्य का अनिवार्य पहलू है।''[ix] किशोरों के लिए लिखा जाने वाला सार्थक साहित्य उनके विकास में मार्ग दर्शक की भूमिका निभाने का काम करता है।

प्राचीन काल से ही बाल साहित्य की प्रासंगिकता बच्चों एवं बड़ों के बीच सदैव विधमान रही है। बाल साहित्य के माध्यम से ही बच्चों मे विभिन्न प्रकार के बालोपयोगी गुण एवं मानवीय मूल्य स्थापित किये जाते रहे हैं। बाल साहित्य अलिखित परम्परा से शुरू होकर लिखित परम्परा तक काफी परिवर्द्वित एवं संबर्द्धित स्वरूप में आज हम सबके समुख है।

बाल साहित्य सरल, सहज, मनोरंजक एवं प्रेरक होता है। जिसे बच्चे आसानी से अपना लेते हैं और सरल पंक्तियों को बार–बार दुहराते या गुनगुनाते भी हैं। शुरूआत में अमीर खुसरो की पहेलियाँ या मुकरियां ही देख लीजियेगा जिन्हें बच्चो ने सहजता से अपना लिया, अमीर खुसरो की कुछ पहेलियां निम्नलिखित हैं–

''एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर औंधाधरा।

चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे।[x] (आकाश)

एक नार ने अचरज किया। साँप मारि पिंजड़े में दिया।

जो–जो साँप ताल को खाए।

सूखे ताल साँप मर जाएगा। (दिया बत्ती)

प्रसिद्व बाल गीत साहित्य इतिहासकार निरंकर देव सेवक ने जो बाल साहित्य समीक्षा को दिशा में उलेखनीय कार्य किया उत्तरोत्तर अनेक साहित्यकारों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य किया, हिन्दी बाल साहित्य में प्रथम पीएच0डी0, हरिकृष्ण देव सरे। तत्पश्चात् डॉ0 मस्तराम कपूर 'उर्मिल' राष्ट्रबन्धु, डॉ0 श्रीप्रसाद, जय प्रकाश भारती, विष्णुकांत पांडेय, डॉ0 चक्रधर नलिन, डॉ0 रोहिताश अस्थाना, डॉ0 प्रकाश मनु, डॉ0 सुरेन्द्र विक्रम, विनोद चंद्र पांडेय, डॉ0 शकुन्तला कालरा, डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' आदि बाल साहित्य समीक्षकों ने सार्थक बाल साहित्य की पहचान के साथ ही बाल साहित्य को नवीन दिशा देने का काम किया है पिछले कई दशकों से बाल साहित्य में अनेकों शोधकार्य किये जा चुके है और वर्तमान समय में भी बाल साहित्य को शोध का विषय बनाया जा रहा है भविष्य में ये शोध कार्य की परम्परा निरन्तर चलते रहने की प्रबल संभावना है। जिससे न सिर्फ बाल साहित्य की प्रासंगिकता बढ़ रही है बल्कि अच्छा बाल साहित्य भी लिखा जा रहा है।

बाल साहित्य की प्रासंगिकता के सन्दर्भ में मस्तराम कपूर का मत है– ''संक्षेप में साहित्य बच्चों के लिए जादुई चिराग सिद्ध होता है क्योंकि वह उनके तमाम प्रभावों की आंशिक पूर्ति कर देता है। यदि बच्चे को अच्छे स्कूल, शिक्षक और साथी संबधी नही मिल सकते तो अच्छा साहित्य उन्हें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना ही चाहिए। यह ठीक है कि बच्चों के जीवन में पुस्तकें माता–पिता एवं शिक्षकों आदि का स्थान नहीं ले सकती किंतु यह भी सत्य है कि पुस्तकों की स्थानापूर्ति किसी अन्य वस्तु से नहीं हो सकती है। किंतु यदि दुर्भाग्य से उन्हें साहित्य भी घटिया कोटि का मिले तो उनके लिए कोई आशा नहीं है इसलिए जो समाज अपने बच्चों के लिए अच्छे साहित्य की व्यवस्था नहीं करता है वह कल कारखानों में पूर्ण विकसित होते हुये भी पिछड़ा हुआ है। जिस समाज में सरस्वती के पुजारी बाल साहित्य की रचना करने में लज्जा अनुभव करते हैं और जो रचना करते हैं उन्हें हेठी नजर से देखते हैं वह समाज बच्चों को उनके मूलभूत आधिकारों से बंचित करने का अपराध करता है।''[xi]

डॉ0 मस्तराम कपूर कहना चाहते हैं कि बच्चों के विकास में बाल साहित्य की अपनी प्रासंगिकता है जिसका स्थान कोई और ग्रहण नहीं कर सकता। आज आधुनिकता के दौर में समाज में काफी परिवर्तन हुये मनोरंजन एवं खेल के आधुनिक माध्यमों का विकास हुआ है। जिसका प्रभाव बड़ों के साथ बच्चों पर भी पड़ा है। जैसे बच्चे पारंपरिक खेलों एव बालगीत, बाल कहानियों आदि बाल साहित्य से कुछ दूर तो होने लगे हैं इनके स्थान पर मोबाइल, लैपटाप, बेब सीरीज, कॉमिक्स, टेलीविजन आदि के शिकार होने लगे हैं। जिसका प्रभाव बच्चों के जीवन में नकारात्मक रूप से होने लगा है। इसी कमी को अच्छे बाल साहित्य के द्वारा दूर किया जा सकता है और दूर किया भी जा रहा है। बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी अच्छा बाल साहित्य अवश्य पढ़ना चाहिए जिससे बच्चों को अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध कराने में आसानी हो सके। आज माता–पिता एवं बड़ों के द्वारा अच्छा बाल साहित्य पढ़ा, लिखा व समझा जा रहा है। अच्छे बाल साहित्य की पहचान में शिक्षक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। परिणामस्वरूप बच्चों की पहुंच तक उत्तम बाल साहित्य उपलब्ध होने लगा है।

इसी सन्दर्भ में डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' कहते हैं ''बाल साहित्य केवल बच्चों के लिए ही नहीं प्रौढ़ो और नवसाक्षरों के लिए भी समान रूप से अपनी महत्ता सिद्ध करता है। वास्तविकता तो यह है कि बच्चे से जुड़े हर व्यक्ति के लिए बाल साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है साहित्य भले ही बच्चों का हो किंतु स्वलंब रूप से उन्हें सोच देना बुद्धिमानी नहीं है। अवस्था एवं समझा की दृष्टि से वह साहित्य कहां तक बच्चों के लिए उपादेय हैं। इसका निर्णय करने के लिए अभिभावकों को उस साहित्य पर दृष्टिपात करना ही होगा। बच्चों से तादाम्य स्थापित करने के लिए साहित्य सहज माध्यम है''[xii] आगे और भी बाल साहित्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुये डॉ0 नागेश पांडे 'संजय' कहते हैं ''बाल साहित्य के द्वारा सहज रूप से बच्चों का मनोरंजन ज्ञान वर्द्धन मानसिक एवं बैद्धिक विकास, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास,

चरित्र निर्माण, पठन एवं साहित्यिक रूचि का विकास सृजनात्मक अभिरूचि का विकास, संस्कृति एवं इतिहास का संरक्षण तथा जनतांत्रिक एवं विश्व बंधुत्व की भावना का विकास किया जा सकता है।''[xiii]

बाल साहित्य बच्चों में कल्पना शक्ति के विकास में सहायक होता है इसी संबंध में डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे बताते है। ''बाल्यावस्था अर्थात चार–पांच वर्ष की आयु को प्राप्त करते ही बालक में मानसिक परिवर्तन होता है वह अपने आस–पास के वातावरण से तादाम्य स्थापित करता है। और विभन्न वस्तुओं के प्रति रूचि प्रकट करता है। उन वस्तुओं के प्रति मन में जागृत होने वाली उत्कण्ठा से प्रेरित होकर वह अनेक प्रश्न पूछता है। इन्हीं प्रश्नों और उनके उत्तरों के माध्यम से धीरे–धीरे कल्पना का प्रादुर्भाव होता है। वह प्राकृतिक उपकरणों से अपने मन की बातें मिलाता है, खुली हवा में दौड़ता खेलता है और मन में अनेक असम्भव बातों को सम्भव बनाकर कल्पना के ताने–बाने बुनता है।''[xiv]

बाल साहित्य की प्रासंगिकता के सन्दर्भ में डॉ0 मस्तराम कपूर बताते कि बाल साहित्य महान और शाश्वत है उन्हीं के शब्दों में ''सारांश यह कि साहित्य में कुछ महान और शाश्वत है वह बाल साहित्य के रूप में सुरक्षित रहता है और फिर इस सुरक्षित भंडार से पुनः व्ययस्क साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण होता है। ये उत्कृष्ट कृतियां पुनः बच्चों का साहित्य बनती जाती हैं। इसी तरह यह चक्र चलता रहता है।''[गअ] डॉ0 मस्तराम कपूर आगे और भी बाल साहित्य का प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुये कहते हैं कि ''यदि कोई यह जानना चाहे कि किसी काल विशेष में किसी देश अथवा जाति की अच्छे और बुरे, घटिया और बढ़िया, पाप और पुण्य, तुच्छ और महान, श्रेष्ठ और नीच की मान्यताएं क्या थीं तो उसे उस समय के बाल साहित्य का अध्ययन करना चाहिए।''[xvi]

अतः कहा जा सकता है कि बाल साहित्य के आधार पर किसी देश या जाति की आवश्यक मान्यताओं का पता लगाया जा सकता है।

डॉ0 मस्तराम कपूर कहते हैं कि बाल साहित्य की परीकथाओं और लोक कथाओं में बच्चों में सच्चाई, ईमानदारी निर्भीकता आदि भाव बच्चों में विभाजित होते हैं उन्हीं निर्भीकता आदि भाव बच्चों में विकसित होते हैं उन्हीं के शब्दों में ''साहित्य जीवन के महान मूल्यों का साधारीकरण करता है। बच्चा साहित्य में अभिव्यक्त इन महान मूल्यों को प्राप्त करने के लिए न केवल उत्सुक रहता है। बल्कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसके लिए प्रयत्न भी करता रहता है। परीकथाओं और लोक कथाओं के बीच पलने वाले बच्चे में सच्चाई, ईमानदारी, निर्भीकता और न्याय प्रियता के भाव सहज रूप से ही भर जाते हैं।''[xvii]

डॉ0 श्रीकांत मिश्रा एवं श्रीमती बेबी शर्मा आज के युग की विसंगतियों एवं विश्व का भविष्य अर्थात बालक के विकास के सन्दर्भ में बाल साहित्य की प्रासंगिकता को बनाये रखने की पहल करते हुये कहते

हैं उन्हीं के शब्दों में ''बालक का बालपन और उसकी स्वभाविक हंसी लुप्त होती जा रही है। बालक को उसका बालपन लौटाने और विश्व का भविष्य संरक्षित करने का एक मात्र उपाय है – उत्तम बाल साहित्य, क्योंकि बाल–साहित्य न केवल बच्चों का मनोरंजन करता है, अपितु उनमें संस्कारों का बीजारोपण कर उन्हें अपने राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के रूप में सुनिर्मित भी करता है।''[xviii]

अतः कहा जा सकता है कि बच्चों के जीवनोत्थान एवं बेहतरीन नागरिक बनाने के लिए उत्तम बाल साहित्य बेहद प्रासांगिक है।

निष्कर्ष –

वर्तमान समय में बाल साहित्य सुविकसित, समृद्धशाली एवं बालोपयोगी मानवीय मूल्यों से अलंकृत है। जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है। किंतु आधुनिकता के दौर में बेहद आवश्यक है कि बच्चों से पहले बड़ों, माता–पिता, शिक्षकों आदि को बाल साहित्य पढ़ना चाहिए जिसमें बच्चों को अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध कराने में आसानी हो क्योंकि हम सब की जिम्मेदारी है यदि कल के भविष्य (राष्ट्र निर्माता), भावी नागरिकों को जितना श्रेष्ठ बाल साहित्य प्रदान किया जा सकेगा। उनमें उतने श्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण की प्रबल संभावना होगी।

बाल साहित्य बच्चों में सही–गलत का भेद समझाने के साथ ही उन्हें सभी राह दिखाने में मार्गदर्शक भूमिका निभाता है। बच्चों के सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक आदि विकास में बाल साहित्य का विशेष योगदान होता है।

अंत में कहा जा सकता है कि बच्चों में कल्पना शक्ति के विकास, सुन्दर व्यक्तित्व निर्माण, जीवनोद्धार, जीवन व्यवहार की समझ विकसित करने में वर्तमान समय में बाल साहित्य बेहद प्रासंगिक है।

सन्दर्भ सूची

1. आधुनिक हिन्दी में बाल साहित्य का विकास, डॉ0 विजय लक्ष्मी सिन्हा, प्रथम संस्करण– 1986, पृष्ठ संख्या–11, प्रकाशक साहित्यवाणी, 28, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद–211006
2. बाल विकास, डॉ0 ओ0पी0सिंह संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या 41, प्रकाशक शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स 11, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद 211002
3. वही पृष्ठ संख्या–4
4. निरंकार देव सेवक द्वितीय संस्करण 2013, बाल साहित्य इतिहास एवं समीक्षा, सम्पादक प्रो0 उषा यादव, पृष्ठ संख्या–7,8, प्रकाशक–उत्तद प्रदेश हिन्दी संस्थान, 6– महात्मागांधी मार्ग, लखनऊ–226001
5. डॉ0 शकुन्तला कालरा, हिन्दी वाल सहित्य विचार और चिंतन–दूसरा संस्करण–2024 पृष्ठ संख्या–7, नमन प्रकाशन 4231/1, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली–110002
6. डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' बाल साहित्य के प्रतिमान, प्रथम संस्करण–2009 पृष्ठ संख्या–10, बुनियादी साहित्य प्रकाशन, राम कृष्ण पार्क अमीनाबाद, लखनऊ
7. डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' बाल साहित्य के प्रतिमान, प्रथम संस्करण–2009 पृष्ठ संख्या–17, बुनियादी साहित्य प्रकाशन, राम कृष्ण पार्क अमीनाबाद, लखनऊ
8. वही पृष्ठ संख्या–18
9. वही पृष्ठ संख्या–18
10. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या–51, प्रकाशन–1929, प्रकाशक–कला मंदिर, 1987, नई सड़क, दिल्ली–110006
11. डॉ0 मस्तराम कपूर : हिन्दी बाल साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन संस्करण–2025, पृष्ठ संख्या–31, प्रकाशक–अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0, 4697/3,21ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
12. डॉ0 नागेश पांडेय 'संजय' बाल साहित्य के प्रतिमान, पृष्ठ संख्या–17, बुनियादी साहित्य प्रकाशन, राम कृष्ण पार्क अमीनाबाद, लखनऊ, प्रथम संस्करण–2009
13. वही, पृष्ठ संख्या–31
14. डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे, बाल साहित्य एक अध्ययन, प्रथम संस्करण 1969, पृष्ठ संख्या–48, प्रकाशक रामलाल पुरी, संचालक, आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–6
15. डॉ0 मस्तराम कपूर : हिन्दी बाल साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन संस्करण–2025, पृष्ठ संख्या–41, प्रकाशक–अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0, 4697/3,21ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

16. वही, पृष्ठ संख्या–41
17. वही, पृष्ठ संख्या–45
18. वही, पृष्ठ संख्या–45